

سُورَةُ الْقَلَمِ

Surah 68 — Al-Qalam (The Pen) • Meccan • 52 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ نَ ۚ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ

नून कलम की और उस चीज़ की जो लिखती हैं (उसकी) क्रसम है

2

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۚ

कि तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़ल (व करम) से दीवाने नहीं हो

3

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ۚ

और तुम्हारे वास्ते यक़ीनन वह अज़्र है जो कभी ख़त्म ही न होगा

4

وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۚ

और बेशक तुम्हारे एख़लाक़ बड़े आला दर्जे के हैं

5

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ

तो अनक़रीब ही तुम भी देखोगे और ये कुफ़्फ़ार भी देख लेंगे

6

بِأَيِّكُمْ الْمَفْتُونُ ۚ

कि तुममें दीवाना कौन है

7

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

बेशक तुम्हारा परवरदिगार इनसे ख़ूब वाकिफ़ है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही हिदायत याफ़्ता लोगों को भी ख़ूब जानता है

8

فَلَا تُطِيعِ الْمُكَذِّبِينَ

तो तुम झुठलाने वालों का कहना न मानना

9

وَدُّوا ۚ لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ

वह लोग ये चाहते हैं कि अगर तुम नरमी एख्तेयार करो तो वह भी नरम हो जाएँ

10

وَلَا تُطِيعُ كُلَّ حَلَّافٍ ۚ مَّهِينٍ

और तुम (कहीं) ऐसे के कहने में न आना जो बहुत क़समें खाता ज़लील औकात ऐबज़ू

11

هَمَّازٍ ۚ مَشَّاءٍ ۚ بَنَمِيمٍ ۚ

जो आला दर्जे का चुग़लख़ोर माल का बहुत बख़ील

12

مَّنَاعٍ ۚ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ ۚ أَثِيمٍ

हद से बढ़ने वाला गुनेहगार तुन्द मिजाज़

13

عُتْلٍ ۚ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ

और उसके अलावा बदज़ात (हरमज़ादा) भी है

14

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ ۚ وَبَنِينَ

चूँकि माल बहुत से बेटे रखता है

15

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ءَايَتُنَا قَالَ أَسْطِيرُ الْأُولِينَ

जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो बोल उठता है कि ये तो अगलों के अफ़साने हैं

16

سَنَسِمُهُۥ ۚ عَلَى الْخُرْطُومِ

हम अनकरीब इसकी नाक पर दाग लगाएँगे

17

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا ۚ لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ

जिस तरह हमने एक बाग़ वालों का इस्तेहान लिया था उसी तरह उनका इस्तेहान लिया जब उन्होंने कसमें खा खाकर कहा कि सुबह होते हम उसका मेवा ज़रूर तोड़ डालेंगे

18

وَلَا يَسْتَتْنُونَ

और इन्शाअल्लाह न कहा

19

فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ ۚ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ

तो ये लोग पड़े सो ही रहे थे कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से (रातों रात) एक बला चक्कर लगा गयी

20

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ

तो वह (सारा बाग़ जलकर) ऐसा हो गया जैसे बहुत काली रात

21

فَتَنَادَوْا ۚ مُصْبِحِينَ

फिर ये लोग नूर के तड़के लगे बाहम गुल मचाने

22

أَنِ اغْدُوا ۚ عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَرِمِينَ

कि अगर तुमको फल तोड़ना है तो अपने बाग़ में सवेरे से चलो

23

فَانْطَلَقُوا ۚ وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ

गरज वह लोग चले और आपस में चुपके चुपके कहते जाते थे

24

أَنْ لَا يَدْخُلْنَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ؟

कि आज यहाँ तुम्हारे पास कोई फ़क़ीर न आने पाए

25

وَعَدُوا؟ عَلَى حَرْدٍ؟ قَدَرِينَ

तो वह लोग रोक थाम के एहतमाम के साथ फल तोड़ने की ठाने हुए सवेरे ही जा पहुँचे

26

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا؟ إِنَّا لَضَالُّونَ

फिर जब उसे (जला हुआ सियाह) देखा तो कहने लगे हम लोग भटक गए

27

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ

(ये हमारा बाग़ नहीं फिर ये सोचकर बोले) बात ये है कि हम लोग बड़े बदनसीब हैं

28

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ

जो उनमें से मुनसिफ़ मिजाज़ था कहने लगा क्यों मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग (खुदा की) तसबीह क्यों नहीं करते

29

قَالُوا؟ سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ

वह बोले हमारा परवरदिगार پاک है बेशक हमीं ही कुसूरवार हैं

30

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتْلَوْنَ

फिर लगे एक दूसरे के मुँह दर मुँह मलामत करने

31

قَالُوا؟ يُؤَيَّلْنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ

(आखिर) सबने इकरार किया कि हाए अफसोस बेशक हम ही खुद सरकश थे

32

عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبَدِّلَنَا خَيْرًا ۚ إِنَّهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رُغْبُونَ

उम्मीद है कि हमारा परवरदिगार हमें इससे बेहतर बाग़ इनायत फ़रमाए हम अपने परवरदिगार की तरफ़ रूजू करते हैं

33

كَذَٰلِكَ الْعَذَابُ ۚ وَلَعَذَابُ آلِٰٓءِآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ

(देखो) यूँ अज़ाब होता है और आख़ेरत का अज़ाब तो इससे कहीं बढ़ कर है अगर ये लोग समझते हों

34

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتٍ النَّعِيمِ

बेशक परहेज़गार लोग अपने परवरदिगार के यहाँ ऐशो आराम के बाग़ों में होंगे

35

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ

तो क्या हम फ़रमाबरदारों को नाफ़रमानों के बराबर कर देंगे

36

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ

(हरगिज़ नहीं) तुम्हें क्या हो गया है तुम तुम कैसा हुक्म लगाते हो

37

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ ۖ فِيهِ تَدْرُسُونَ

या तुम्हारे पास कोई ईमानी किताब है जिसमें तुम पढ़ लेते हो

38

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ

कि जो चीज़ पसन्द करोगे तुम को वहाँ ज़रूर मिलेगी

39

أَمْ لَكُمْ أَيْمَنٌ عَلَيْنَا بَلِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ

या तुमने हमसे कसमें ले रखी हैं जो रोज़े क़यामत तक चली जाएगी कि जो कुछ तुम हुक्म दोगे वही तुम्हारे लिए ज़रूर हाज़िर होगा

سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ بِذَلِكَ زَعِيمٌ

उनसे पूछो तो कि उनमें इसका कौन ज़िम्मेदार है

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ

या (इस बाब में) उनके और लोग भी शरीक हैं तो अगर ये लोग सच्चे हैं तो अपने शरीकों को सामने लाएँ

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ

जिस दिन पिंडली खोल दी जाए और (काफ़िर) लोग सजदे के लिए बुलाए जाएँगे तो (सजदा) न कर सकेंगे

خُشِعَةً أَبْصَرُهُمْ تَرَهِقُهُمْ ذَلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سَلِيمُونَ

उनकी आँखें झुकी हुई होंगी रूसवाई उन पर छाई होगी और (दुनिया में) ये लोग सजदे के लिए बुलाए जाते और हटटे कटटे तन्दरूस्त थे

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكْذِبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ

तो मुझे उस कलाम के झुटलाने वाले से समझ लेने दो हम उनको आहिस्ता आहिस्ता इस तरह पकड़ लेंगे कि उनको खबर भी न होगी

وَأَمْلَى لَهُمْ ۚ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ

और मैं उनको मोहलत दिये जाता हूँ बेशक मेरी तदबीर मज़बूत है

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا ۖ فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ ۚ مُثْقَلُونَ

(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत का) कुछ सिला माँगते हो कि उन पर तावान का बोझ पड़ रहा है

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ

या उनके इस ग़ैब (की खबर) है कि ये लोग लिख लिया करते हैं

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْأُخُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۝

तो तुम अपने परवरदिगार के हुक्म के इन्तेज़ार में सब्र करो और मछली (का निवाला होने) वाले (यूनुस) के ऐसे न हो जाओ कि जब वह गुस्से में भरे हुए थे और अपने परवरदिगार को पुकारा

لَوْلَا أَن تَدْرَكُهُ ۝ نِعْمَةٌ ۝ مِّن رَّبِّهِ ۝ لَنُبَذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۝

अगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी उनकी यावरी न करती तो चटियल मैदान में डाल दिए जाते और उनका बुरा हाल होता

فَأَجْتَبَاهُ رَبُّهُ ۝ فَجَعَلَهُ ۝ مِنَ الصَّالِحِينَ

तो उनके परवरदिगार ने उनको बरगुज़ीदा करके नेकोकारों से बना दिया

وَإِن يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۝ لَيُزْلِقُونَكَ بِأَبْصَرِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا ۝ الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ إِنَّهُ ۝ لَمَجْنُونٌ ۝

और कुफ़्फ़ार जब कुरान को सुनते हैं तो मालूम होता है कि ये लोग तुम्हें धूर धूर कर (राह रास्त से) ज़रूर फिसला देंगे

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ ۝ لِلْعَالَمِينَ

और कहते हैं कि ये तो सिड़ी हैं और ये (कुरान) तो सारे जहाँ की नसीहत है